VISION IAS

www.visionias.in

SUBJECT:	LAKSHYA ESSAY - 2021	Test Code:	2043
Name of Candidate	ANKIT KUMAR JAIN		
Medium Hindi/Eng.	HINDI	Registration Number	649298
Center	JAIPUR	Date	140622

INDEX TABLE

Q. No.	Page No.	Maximum Marks	Marks Obtained

Total Marks Obtained:

Remarks :

INSTRUCTIONS

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).
2. All questions are compulsory.
3. The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
4. Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate, which must be stated clearly on the cover of this Question-Cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other that the authorized one.
5. Word limit in questions, if specified, should be adhered to.
6. Any page or portion of the page left blank in the Question-Cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

Scanned with CamScanner

EVALUATION INDICATORS

1. **Contextual Competence**
2. **Content Competence**
3. **Language Competence**
4. **Introduction Competence**
5. **Structure - Presentation Competence**
6. **Conclusion Competence**

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

1.

2.

3.

4.

5.

6.

All the Best

Scanned with CamScanner

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

आगे बढ़ने के कई तरीके हैं, लेकिन स्थिर रहने का एक ही तरीका है।

"किसी को घर से निकलते ही
मिल गई मंज़िल।
कोई हमारी तरह उम्र भर
सफर मे रहा।"

मशहूर शायर अहमद फराज़ की यह पंक्तियाँ जीवन यात्रा के उस निष्कर्ष को व्यक्त करती है, जिसमे सफलता - असफलता की ढेरो कहानियाँ छिपी हुई है। लंबे उतार - चढ़ाव भरे जीवन के सफर मे किसी बुजुर्ग से जब पूछते है कि, "उनके जीवन का सार क्या है?" तो अक्सर वो कहते है - आगे बढ़ने के कई तरीके है, लेकिन

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

स्थिर रहने का एक ही तरीका है।"

इस जवाब का विश्लेषण सामान्य शब्दो के बजाय संकेताक्षरो और उदाहरणो से ही किया जा सकता है। कथन का प्रथम हिस्सा — 'आगे बढ़ने के कई तरीके है', जीवन यात्रा को कई प्रकार से जीने और सफल मनुष्य बनने की ओर इंगित करते है।

एक सफल व्यक्ति निरंतर आगे बढ़ता रहता है।, इस हेतु वो न केवल नवीन प्रयोग करता है अपितु अपनी असफलताओ को भी स्वीकार कर उनसे सीखता है। आगे बढ़ने के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के उपाय किए जाते है।

प्रथमत: विचार करे तो कई बार पुरानी परंपराओ का अनुसरण करके ही आगे बढ़ा जा सकता है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

एक छोटी कक्षा के विद्यार्थी द्वारा जो शिक्षक से सीखता है वही ग्रहण करता है, वह उसे परंपरा से अर्जित ज्ञान है। इसी आधार पर वह आगे की कक्षाओं मे पहुंचता है।

सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओ का आगे बढ़ने का तरीका भी यही है। इससे एक ओर स्थायित्व बढ़ता है तो दूसरी ओर वि-श्वास भी बना रहता है। इसी संदर्भ मे श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने कहा था, "सिर्फ विरोध के लिए बदलाव नही होना चाहिए जो अच्छा उसे आगे बढ़ाना चाहिए।

इसी के विपरीत, आगे बढ़ने के लिए निरंतर नए - नए बदलाव का विचार भी कई विचारको ने प्रस्तुत किया है। इन प्रयोगो मे जहाँ वह कई बार सफल होता है तो कई बार असफल। यही सब - कुछ उसे निरन्तर आगे बढ़ने की गति भी प्रदान करती है।

Scanned with CamScanner

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

प्रसिद्ध वैज्ञानिक थॉमस अल्वा एडीसन ने बल्ब का अविष्कार करने से पूर्व हजारो प्रयोग किए। उन प्रयोगो से उन्हे असफलता मिली परन्तु उसके प्रति भी एडीसन का सकारात्मक दृष्टिकोण था। उनका मानना था कि, 'मैंने ऐसे हजारो प्रयोग सिद्ध किए है जो बताते है कि उनसे बल्ब का निर्माण नही हो सकता।

इसी प्रकार नए प्रयोगो से आगे बढ़ने मे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का नाम महत्वपूर्ण है। उन्होने तत्कालीन विश्व मे प्रचलित सैन्य अथवा विद्रोही गतिविधियों से आजादी के बजाय सत्याग्रह और अहिंसा जैसे उपकरणो से आजादी दिलाई। तथा दूसरे देशो को भी इसी प्रकार आगे बढ़ने की राह दिखाई।

इस प्रकार मे (आगे बढ़ने का तरीका – नए-नए प्रयोग मे) महत्वपूर्ण है कि प्रयोग करने वाला अपनी असफलताओ

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

का सूक्ष्म विश्लेषण कर उनसे सीखे और उन्हे दोहराएँ नही।

प्राचीन दार्शनिको मे अग्रणी अरस्तू का मानना था कि जरूरी नही आगे बढ़ने के लिए खुद की गलतियों से ही सीखा जाए; दूसरो की गलतियों से भी सीखा जा सकता है। इस सन्दर्भ मे पुस्तको का महत्व बढ़ जाता है। ज्ञान प्राप्ति के साथ-साथ जीवन के अनुभवो को साझा करने वाली पुस्तके भी आगे बढ़ने मे मददगार होती है।

पुस्तके ना केवल ज्ञान बल्कि प्रेरणा, और सकारात्मकता का ऐसा सचांर करती है कि समाज मे स्वस्थ प्रतिस्पर्द्धा का निर्माण करती है। 2014 बैच के भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी श्री निशान्त जैन द्वारा लिखी पुस्तक - मुझे बनना है आई. ए. एस. भी ऐसी ही एक पुस्तक है जो आगे बढ़ने की प्रेरणा देती हो

Scanned with CamScanner

जीवन मे कई बार ऐसी घटनाएँ हो जाती है जो जीवन के उद्देश्य को बदलकर नए तरीके से आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। गौतम बुद्ध के जीवन की चार घटनाएँ (वृद्ध व्यक्ति, बीमार व्यक्ति, मृत व्यक्ति और सन्यासी को देखना) भी ऐसी ही थी।

मदर टेरेसा का भारत आगमन और अनाथो तथा वृद्धो की दुर्दशा देखकर उन्हे उनकी सेवा करने की प्रेरणा मिली। करुणा (Compassion) की भावना से ओत-प्रोत ऐसी घटनाएँ समाज को सुधार की दिशा मे तो लेकर जाती है स्वयं व्यक्ति का भी परिष्कार करती है।

हालाँकि कई विचारको ने यह भी माना है कि आगे बढ़ने का प्रकार (Type) अलग-अलग हो सकता है परन्तु उसके मूल मे जो शक्ति उसे गतिशील बनाती है वह एक ही है।

Scanned with CamScanner

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

मशहूर एन्टरप्रेन्योर स्टीव जॉब्स का मानना था कि वही काम उसे आगे बढ़ा सकता है जो उसे पसंद हो तथा जिसमे उसे विश्वास हो। इसमे रूचि को अधिक महत्वपूर्ण माना है ताकि वह शत प्रतिशत प्रयासो से उस कार्य को करते रहे।

इसी प्रकार श्रीमद्‌भगवद्‌गीता का कथन - 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' (कर्म करते रहो, फल की इच्छा मत करो) निष्काम कर्म के माध्यम से आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

आगे बढ़ने के तरीको पर चर्चा के पश्चात आगे का कथन है - "स्थिर रहने का एक ही तरीका है"। यह कथन स्पष्ट करता है कि असफलता का मूल कारण एक ही है जब आपका अपने कार्य मे विश्वास न हो।

Scanned with CamScanner

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

चाणक्य का प्रसिद्ध कथन इस संदर्भ मे सटीक है - " कोई भी व्यक्ति तब असफल हो जाता है जब वह सोच लेता है कि वह जीत नही सकता" आत्मविश्वास से हीन मनुष्यो के लिए सफल होना नामुमकिन जैसा ही है।

किसी भी मार्ग मे स्थिर रहने वाला पथिक कई कारणो से रुक सकता है जैसे - आर्थिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक कारण। परन्तु जो मूल कारण होता है वह है - उसका अपने लक्ष्य मे विश्वास का अभाव।

यदि पथिक का लक्ष्य मे विश्वास है तो उसके पास आगे बढ़ने के कई विकल्प निर्मित हो जाते है परन्तु यदि उसका मन ही नही है तो हजार विकल्पो पर भी बहानो का निर्माण कर सकता है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

युद्ध के सम्बन्ध में एक कथन है कि सेना की विजय या पराजय उसके मनोबल से तय होती है नकि संख्याबल से। हाल ही में आई एक हिंदी फिल्म 'कौन प्रवीण तांबे' मे क्रिकेटर प्रवीण तांबे के मनोबल का सटीक चित्रण किया है।

असफलता, पराजय, हार, आदि ऐसे शब्द है जिन्हे कोई सुनना पसंद नही करता; बावजूद इसके यह प्रत्येक के साथ संलग्न होता है। यदि किसी को गतिशील होना है अथवा आगे बढ़ना है तो उसे कार्य मे विश्वास बनाए रखना जरूरी है।

यही विश्वास उसके लिए आगे के नए रास्तो को खोलता है। इसलिए कहा जाता है कि आगे बढ़ने के कई तरीके है लेकिन स्थिर रहने का एक ही

Scanned with CamScanner

तरीका है।

स्वामी विवेकानन्द का यह कथन जीवन मे सदैव ध्यान रखने लायक है- उठो, उठो, जागो और लक्ष्य को प्राप्ति तक मत रुको।

Scanned with CamScanner